श्री

स्थानाङ्ग सूत्रके पांचवें भागकी

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
	आठवां स्थान	
१	आठवें स्थानका विषय विवरण	१
२	एकलविहारी साधुके स्वरूपका वर्णन	२– ६
३	योनिसंग्रह और गतिआगतिका निरूपण	७– ९
४	कर्मप्रकृतिके चयादिका निरूपण	१०–१२
५	मायावीके मायाके आलोचनका निरूपण	१३–२१
६	मायावी साधुके स्वरूपका निरूपण	२२–२८
७	अनालोचित–अप्रतिक्रान्त मायावीके उपपातकी गर्हणाका निरूपण	२९–३१
८	अनालोचित–अप्रतिक्रान्त मायावीकी आयतिकी गर्हणाका निरूपण	३२–३५
९	आलोचित–प्रतिक्रान्त मायावीके उपपातकी प्रशंसा	३६–४२
१०	आलोचित–प्रतिक्रान्त मायावीकी आयतिकी प्रशंसा	४३–४८
११	संवरासंवरका निरूपण	४९
१२	आठ प्रकारकी लोकस्थितिका निरूपण	५०–५२
१३	आठ प्रकारकी गणिसंपदाका निरूपण	५३–५६
१४	महानिधिका निरूपण	५७
१५	ईर्यासमित्यादि भावनिधिका निरूपण	५७–६०
१६	आलोचना देनेवाले आचार्य और लेनेवाले साधुके प्रायश्चित्तका निरूपण	६१–७०
१७	आठ प्रकारके मदस्थानोंका निरूपण	७१
१८	आठ प्रकारके अक्रियावादियोंका निरूपण	७२–८९

१९	पापशास्त्रोंका निरूपण	९०–९४
२०	वचनविभक्तिके स्वरूपका निरूपण	९५–१०१
२१	आयुर्वेदके स्वरूपका निरूपण	१०२–१०५
२२	शक्रादि देवेन्द्रोंकी अग्रमहिषियोंका निरूपण	१०६–१०७
२३	असमारंभ और समारंभसे संयमासंयमका निरूपण	१०८–१११
२४	आठ प्रकारके सूक्ष्मजीवोंका निरूपण	११२–११३
२५	सिद्धके स्वरूपका निरूपण	११४–११६
२६	दर्शनोंके स्वरूपका निरूपण	११७
२७	अद्धौपम्य कालके स्वरूपका निरूपण	११८–१२१
२८	भगवान महावीरके द्वारा प्रव्रजित हुए आठ राजाओंका निरूपण	१२२–१२६
२९	आहार के स्वरूपका निरूपण	१२७–
३०	कृष्णराजी और तद्गत लोकान्तिक विमान और देवोंके स्वरूप निरूपण	१२८–१३३
३१	धर्मादि चारके मध्यभागका आठस्थानोंसे निरूपण	१३४–
३२	भविष्यके तीर्थंकर द्वारा प्रव्रतित होनेवाले राजाओंका निरूपण	१३५–
३३	कृष्णकी अग्रमहिषियोंका निरूपण	१३६–१३७
३४	आठ प्रकारके गतिका निरूपण	१३८–१३९
३५	अन्तर्द्वीपोंका निरूपण	१४०–१४२
३६	चक्रवर्तीके रत्नविशेषका निरूपण	१४३–१४४
३७	योजनके प्रमाणका निरूपण	१४५–१४६
३८	जम्बूस्वामी आदिकोंका निरूपण	१४७–१४९
३९	जम्बू मन्दरमें रही अन्य वस्तुओंका निरूपण	१५०–१५४
४०	तीर्थंकरके स्वरूपका निरूपण	१५५–१५६
४१	दीर्घवैताढ्य आदिकोंका निरूपण	१५७–१६२
४२	मन्दर चूलिकाका निरूपण	१६३–१६५

४३	क्षेत्राधिकारसे जम्बूद्वीपान्तर्गत पदार्थोंका निरूपण	१६६-
४४	पर्वतके ऊपर रहे कूटोंका निरूपण	१६७-१७८
४५	देवकल्प और देवेन्द्रोंके विमानका निरूपण	१७९-१८०
४६	तपोविशेषका निरूपण	१८१-१८४
४७	संसारसमापन्नक जीवोंका निरूपण	१८५-१८६
४८	आठ प्रकारके संयमोंके स्वरूपका निरूपण	१८७-१९०
४९	आठ प्रकारकी पृथिवीके स्वरूपका निरूपण	१९१-१९२
५०	शुभानुष्ठान श्रवणसे आठ स्थानोंके स्वरूपका निरूपण	१९३-१९७
५१	महाशुक्र सहस्रार विमानके उच्चत्वका निरूपण	१९८
५२	आठप्रकारके सामायिक औरकेवली समुद्घातका निरूपण	१९९-२०२
५३	देवताओंके स्वरूपका निरूपण	२०३-२०६
५४	नक्षत्रोंके स्वरूपका निरूपण	२०७-२०८
५५	पुरुषवेदनीय कर्मके स्वरूपका निरूपण	२०९-२१०
५६	पुद्गलोंके चय और उपचयका निरूपण	२११-२१२
	नववें स्थानका प्रारंभ	
५७	सांभोगिकोंको विसांभोगिक करनेका निरूपण	२१३-२१४
५८	आचारांगके ब्रह्मचर्यरूप नव अध्ययनोंका निरूपण	२१५-२१८
५९	ब्रह्मचर्य गुप्तिके स्वरूपका निरूपण	२१९-२२३
६०	ब्रह्मचर्यके नवविध अगुप्तिके स्वरूपका निरूपण	२२४-२२६
६१	नव प्रकारके सद्भाव पदार्थका निरूपण	२२७-
६२	नव प्रकारके संसारी जीवोंके गतिआगति आदिका निरूपण	२२८-२३४
६३	जीवोंके रोगोत्पत्तिके निमित्तका निरूपण	२३५-२३६
६४	आंतररोगके कारणका निरूपण	२३७-२४०
६५	चन्द्रयोगी नक्षत्रोंका निरूपण	२४१-२४२
६६	वर्तमान अवसर्पिणीमें बलदेव वासुदेवके पिताका निरूपण	२४३-२४७
६७	चक्रवर्तीके महानिधिका निरूपण	२५८

६८	नवप्रकारके विकृतिके नामका निरूपण	२५८–२६०
६९	शरीरके नव छिद्रोंका निरूपण	२६१
७०	नव प्रकारके पुण्यका निरूपण	२६२–२६३
७१	पापके कारणोंका निरूपण	२६४
७२	पापश्रुतका निरूपण	१६५–२६६
७३	निपुण पुरुषका निरूपण	२६७–२६९
७४	साधुके गणका निरूपण	२७०–
७५	नवकोटि (नववाड) से शुद्ध भिक्षाका निरूपण	२७१–२७२
७६	ईशान देवेन्द्रके अग्रमहिषीका निरूपण	२७३–
७७	देवनिकायके स्वरूपका निरूपण	२७४–
७८	अव्याबाध देवके ग्रैवेयक विमान प्रस्तरका निरूपण	२७५–२७६
७९	आयुके परिणामका निरूपण	२७७–
८०	भिक्षुप्रतिमाके स्वरूपका निरूपण	२७९–
८१	प्रायश्चित्तके स्वरूपका निरूपण	२८१–२८२
८२	दक्षिण भरतमें रहे हुवे सिद्धादिकूटोंका निरूपण	२८३–२८८
८३	आंतररोगके कारण कर्मविशेषका निरूपण	२८९–२९०
८४	तीर्थंकरादिके नाम गोत्रप्राप्त करनेवाले श्रेणिक आदिकोंका निरूपण	२९१–२९२
८५	भावी मध्यमतीर्थंकर केवलीके स्वरूपका निरूपण	२९३–२९९
८६	श्रेणिकके तीर्थंकरत्वका निरूपण	३००–३२८
८७	महापद्मजिनके द्वारा प्ररूपित होनेवाले आरम्भ आदि स्थानोंका निरूपण	३२९–३३२
८८	नक्षत्रविशेषका निरूपण	३३३
८९	कल्पविशेष में रहे हुए विमानकी संख्याका निरूपण	३३४
९०	ऋषभ कुलकर विशेष ऋषभ प्रवर्तित प्रवृत्तिका निरूपण	३३५–३३६
९१	ग्रह विशेष वीथि प्रमाणका निरूपण	३३७
९२	नव प्रकारके नो कषायका निरूपण	३३८

९३	कुलकरके कोटिका निरूपण	३३८–३३९
९४	पुद्गलके स्वरूपका निरूपण	३३९–३४०
	दशवें स्थानका प्रारम्भ	
९५	दशवें स्थानका विषय विवरण	३४१–
९६	लोकस्थितिका निरूपण	३४२–३४७
९७	शब्दभेदका निरूपण	३४८–३४९
९८	दश प्रकारके इन्द्रियार्थोंका निरूपण	३५०–३५२
९९	पुद्गलके स्वरूपका निरूपण	३५३–३५५
१००	क्रोधके उत्पत्तिके कारणका निरूपण	३५६–३५८
१०१	संयमादि निरूपण	३५९–३६१
१०२	असंवरका विशेष प्रकारका कथन	३६२–३६३
१०३	समाधि और असमाधिका निरूपण	३६४
१०४	दश प्रकारकी प्रवृज्याका निरूपण	३६५–३६७
१०५	दश प्रकारके श्रमणधर्मका निरूपण	३६८
१०६	दश प्रकारकी वैयावृत्यका निरूपण	३६९–३७०
१०७	जीवके परिणामका निरूपण	३७१–३७८
१०८	अजीवके परिणामका निरूपण	३७९–३८६
१०९	अस्वाध्यायके स्वरूपका निरूपण	३८७–३९५
११०	संयमासंयमके स्वरूपका निरूपण	३९६–३९८
१११	सूक्ष्मके स्वरूपका निरूपण	३९९–४००
११२	गंगासिंधु वगैरह नदियोंमें आत्मसमर्पण करनेवाली नदीक निरूपण	४०१–४०२
११३	भरतक्षेत्रगत राजधानीका निरूपण	४०३–४०५
११४	जम्बूद्वीपगत मेरुके उद्वेध आदिका निरूपण	४०६
११५	जम्बूमन्दर गत आठ प्रदेशवाले रुचक पर्वतका निरूपण	४०७–४०८
११६	लवणसमुद्रगत गोतीर्थ रहित क्षेत्रका निरूपण	४०९–४१२
११७	धातकी खण्डगत मंदरपर्वतके उद्वेध आदिका निरूपण	४१३–४१४

११८	जम्बू द्वीपगत भरतादि दशक्षेत्रका निरूपण	४१५–४१६
११९	अञ्जनक पर्वत आदिके उद्वेध आदिका निरूपण	४१७–४१८
१२०	रुचकवर कुण्डलवर पर्वतके उद्वेध आदिका निरूपण	४१९
१२१	द्रव्यानुयोगके स्वरूपका निरूपण	४२०–४२९
१२२	चमरादि अच्युतेन्द्र आदिके उत्पात पर्वतका निरूपण	४३०–४४९
१२३	योजन सहस्रात्मक अवगाहनाका निरूपण	४५०–४५२
१२४	दश प्रकारके अन्तके स्वरूपका निरूपण	४५३–४५४
१२५	पूर्वगतश्रुतका निरूपण	४५५
१२६	दश प्रकारकी प्रतिसेवनाका निरूपण	४५६–४५९
४२७	आलोचनामें त्यागने योग्य दोषोंका निरूपण	४६०–४६२
१२८	आलोचना देनेवाले और लेनेवालेके गुणका निरूपण	४६३–४७१
१२९	प्रायश्चित्तके स्वरूपका निरूपण	४७२–४७४
१३०	मिथ्यात्वका निरूपण	४७५–४७७
१३१	वासुदेव सम्बन्धी वक्तव्य निरूपण	४७८–४८०
१३२	भवनवासी देवका निरूपण	४८१
१३३	दश प्रकारके सुखका निरूपण	४८२–४८५
१३४	उपघात और विशोधिके स्वरूपका कथन	४८६–४९५
१३५	संक्लेश और असंक्लेशके स्वरूपका कथन	४९६–४९७
१३६	दश प्रकारके बलका निरूपण	४९८–५००
१३७	सत्यमृषा आदिका निरूपण	५०१–५१२
१३८	दृष्टिवादके नामका निरूपण	५१३–५१७
१३९	दश प्रकारके शस्त्रका निरूपण	५१८–५३७
१४०	वाग् (वाणी–वचन) योगका निरूपण	५३८–५५०
१४१	दानके भेदोंका कथन	५५१–५५५
१४२	गति के भेदोंका निरूपण	५५६-५५८
१४३	दश प्रकारके मुण्डके स्वरूपका कथन	५५९–५६०
१४४	दश प्रकारके संख्यानका निरूपण	५६१–५६४

१४५	दश प्रकारके प्रत्याख्यानका निरूपण	५६५–५७२
१४६	दश प्रकारकी सामाचारीका निरूपण	५७३–५८०
१४७	महावीर भगवानके दश महास्वप्नोंका निरूपण	५८१–५८३
१४८	दश महास्वप्नके फलका निरूपण	५८४–५९१
१४९	सराग सम्यग्दर्शनका निरूपण	५९२–५९९
१५०	दश प्रकारकी संज्ञाओंका निरूपण	६००–६०३
१५१	नैरयिकोंकी दुःखवेदनाका निरूपण	६०४–६०५
१५२	अमूर्त अर्थको जिन ही जानतें है ऐसा निरूपण	६०६–६०९
१५३	जिनप्रणीत परोक्षार्थ प्रदर्शक श्रुतविशेषका निरूपण	६१०–६१८
१५४	नारकादि जीवके द्रव्यभेदका निरूपण	६१९–६२४
१५५	भद्रकर्मकारीके कारणका निरूपण	६२५–६३०
१५६	आशंसा योगका निरूपण	६३१–६३३
१५७	दश प्रकारके धर्मका निरूपण	६३४–६३६
१५८	दश प्रकारके स्थविरोंका निरूपण	६३७–६३८
१५९	पुत्रके भेदोंका निरूपण	६३९–६४१
१६०	दश प्रकारके अनुत्तरका निरूपण	६४२–६४३
१६१	मनुष्य क्षेत्रादिका निरूपण	६४४–६४६
१६२	दुष्षम सुषमाके परिज्ञानके प्रकारका निरूपण	६४७–६४८
१६३	सुषमसुषमाके कुछ विशेष कथन	६४९–६५१
१६४	दश कुलकरोंके नामका निरूपण	६५२–६५३
१६५	दश प्रकारके वक्षस्कार पर्वतका निरूपण	६५४
१६६	कल्पके स्वरूपका निरूपण	६५५–६५७
१६७	दश प्रकारके प्रतिमाके स्वरूपका निरूपण	६५८–६६१
१६८	जीवके भेदका निरूपण	६६२–६६४
१६९	संसारी जीवके अवस्थाका निरूपण	६६५–६७१
१७०	वनस्पतिकी अवस्थाका निरूपण	६७२
१७१	विद्याधर श्रेणियोंके विष्कम्भमानका निरूपण	६७३–६७५

१७२	देवावास विशेषका निरूपण	६७५-
१७३	तेजोनिसर्गका निरूपण	६७६-६८४
१७४	दश प्रकारके आश्चर्यका निरूपण	६८५-६९२
१७५	रत्नप्रभा पृथ्वीके संबंधका कथन	६९३-६९४
१७६	रत्नप्रभाके आधेयभूत द्वीपादिका निरूपण	६९५
१७७	ज्ञानके वृद्धि करनेवाले नक्षत्रोंका निरूपण	६९७-६९८
१७८	कुलकोटी सूत्रका निरूपण	६९९-७००
१७९	चयादिका निरूपण	७०१-७०६
१८०	शास्त्रप्रशस्ति	७०७-७०८

॥ समाप्त ॥

卐